किस प्रकार का होना चाहिए। इसका सही ज्ञान व्यक्ति में भाषायी कौशल का निर्माण कर सकता है। वाक्य के पद सार्थक होने चाहिए। एक अच्छे वाक्य की पाँच आवश्यकताएँ होती है-

① सार्थकता - वाक्य के पद सार्थक होने चाहिए नही तो भाषा का मूल उद्देश्य 'विचारों का आदान-प्रदान' ही संभव नहीं होगा।

② योग्यता - वाक्य तार्किक धरातल पर सही होना चाहिए। उदाहरण - वह पेड़ को पत्थर से सींचता है। वाक्य रचना की दृष्टि से कर्ता, करण, क्रिया, कर्म आदि सभी स्थान पर है परन्तु पत्थर में पेड़ को सींचने की योग्यता नहीं होती।

③ आकांक्षा - आकांक्षा का अर्थ है इच्छा। वाक्य में क्षमता होनी चाहिए कि श्रोता जब उसे सुने तो उसके अंदर और जानने की इच्छा शेष नहीं रहनी चाहिए अर्थात उसे पूरा समझ आ जाए। उदाहरण - राम अपने घर जा रहा है। इसमें से यदि हम 'राम' 'घर', जा कह दे तो समझ नहीं आएगा। सभी पदों का वाक्य में एक साथ प्रयोग करना चाहिए।

④ सन्निधि - सन्निधि का अर्थ है 'निकटता'। वाक्य के पदों एक साथ बोलने में सही अर्थ मिलता है। 'राम घर जाता है'। एक-एक पद को कुछ समय/10, 10 मिनट के बाद बोले तो अर्थ नहीं मिलेगा।

⑤ अन्विति - वाक्य कर्ता-कर्म-क्रिया अथवा विशेष्य-विशेषण आदि की तार्किक संगति। यह प्रत्येक भाषा में भिन्न होती है। अंग्रेजी मे कर्ता+क्रिया-कर्म होता है। ऐसा न करने पर वाक्य गलत हो जाएगा।

इसके साथ भाषा कौशल के लिए व्यक्ति को पूर्णांग वाक्य, अल्पांग वाक्य, सरल वाक्य, जटिल वाक्य, संयुक्त वाक्य और मिश्रवाक्य की जानकारी भी होनी चाहिए।

④ पदबंध → जब किसी वाक्य में एक से अधिक पद मिलकर एक व्याकरणिक इकाई - संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि का काम कर रहे हों तो उस व्याकरणिक इकाई को पदबंध कहते हैं।

④ रूप स्तर - 'रूप' को 'पद' भी कहते हैं। स्थूल रूप मे शब्द मे 'विभक्ति' अथवा 'प्रत्यय' लगाकर जब उसे वाक्य में प्रयोग करने योग्य बना लिया जाए तब वह 'पद' कहलाता है।

Scanned by TapScanner